तताँरा वामीरो कथा

लीलाधर मंडलोई

प्रदत्त कार्य-1 : कहानी लेखन

विषय : 'शब्दों पर आधारित कहानी लेखन'

उद्देश्य :

- कल्पनाशक्ति का विकास।
- लेखन कौशल का विकास।
- वाचन कौशल का विकास।
- नए शब्द भंडार से परिचय।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. कहानी लेखन के लिए कहानी विधा से परिचित करवाना।
3. शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखे जाएंगे।

   नियम, कुरीति, आजादी, पढ़ाई, समाज, बंधन, परंपरा, आत्मनिर्भर, खंडन, बेटी, विवाह, शादी, ससुराल, प्रथा, पुत्र, शिक्षा, रूचि, सुधार, आंदोलन, ज्ञान
4. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को उपरोक्त शब्दों की सहायता से किसी एक विषय पर 150 शब्दों में कहानी लिखने के लिए प्रेरित किया जाएगा।
5. मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
6. जब विद्यार्थी कार्य कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर विद्यार्थियों के कार्य का निरीक्षण व यथासंभव सहायता करेंगे।
7. प्रत्येक विद्यार्थी अपनी कहानी की प्रस्तुति स्वयं करेगा व शिक्षक तथा अन्य विद्यार्थी उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- कल्पनाशीलता

- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना
- भाषा शैली
- रोचकता
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि:

- छात्रों की कल्पनाशीलता व सृजनशीलता की सराहना की जाएगी।
- सर्वश्रेष्ठ कहानियों की सराहना की जाएगी।
- कमजोर लेखन को प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया जाएगा।
- सभी कहानियों को संकलित करके कक्षा के लघु कहानी संग्रह का निर्माण करवाया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-2 : नाट्य मंचन

विषय : लोककथा पर आधारित नाटक मंचन।

उद्देश्य :

- अभिनय क्षमता का विकास।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास।
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक पाठ को पढ़ाकर उसे नाटकीय रूप देने के विषय में चर्चा करेंगे।
3. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न समूहों में बांटा जाएगा प्रत्येक समूह में पांच-छः विद्यार्थी हो सकते हैं।
4. शिक्षक द्वारा कहानी को नाटकीय रूप प्रदान करने के लिए संवाद लेखन शैली का ज्ञान विद्यार्थियों को दिया जाएगा।

5. प्रत्येक समूह को किसी एक कहानी (लोककथा) को पढ़कर नाटक रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

6. विद्यार्थियों को लोककथा छांटने, नाटकीय रूप प्रदान करने व प्रस्तुति के लिए 7-8 दिनों का समय दिया जाएगा।

7. सप्ताह के दौरान शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों से कार्य की प्रगति पर बातचीत की जाएगी।

8. मूल्यांकन के आधार बिंदु विद्यार्थियों को पहले से ही स्पष्ट कर दिए जाएंगे।

9. नियत दिन प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय शिक्षक व अन्य समूह उनका मूल्यांकन करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु का चुनाव
- संवाद लेखन क्षमता
- अभिनय शैली
- भाषा शैली
- आत्मविश्वास व हाव भाव

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ कहानी व नाटय रूपांतरण की सराहना।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना।
- नाटक लेखन व प्रस्तुति की सामान्य कमियों पर शिक्षक की टिप्पणी एवं सुझाव।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का विद्यालय के मंच पर प्रस्तुतीकरण।

प्रदत्त कार्य-3 : लोकगीत संग्रह

विषय : विविध लोकगीतों का संग्रह करना।

उद्देश्य :

- लोकगीतों के प्रति ध्यान आकर्षित करना।
- संगीतात्मक अभिरूचि उत्पन्न करना।

- लोकभाषा के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना।
- संस्कृति से जोड़ना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक कार्य से संबंधित पूर्ण जानकारी प्रदान करें।
3. लोकगीत के चयन एवं तैयारी हेतु विद्यार्थियों को एक सप्ताह पूर्व ही बता दिया जाए।
4. कक्षा को कुछ समूहों में विभाजित किया जाए।
5. तय दिवस को विद्यार्थी पूरी तैयारी के साथ कक्षा में सामूहिक रूप से लोकगीत का गायन करें।
6. आवश्यकतानुसार विद्यार्थी वाद्य यंत्रों का उपयोग कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- लोकगीत का चयन
- लयात्मक प्रस्तुति
- आत्मविश्वास
- उच्चारण (स्वर की स्पष्टता)
- समग्र प्रस्तुति (वाद्य यंत्र)

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली गायन की सराहना की जाएगी।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन देकर प्रेरित किया जाए।
- अच्छी प्रस्तुति न कर पाने वाले समूह को एक अवसर और दिया जाए।
- संगीत अध्यापक की मदद ली जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : परिचर्चा

विषय : समाज में व्याप्त रूढ़ियों पर चर्चा करना।

उद्देश्य :

- समाज में व्याप्त अंधविश्वासों व रूढ़िवादिता से परिचित करवाना।
- चिंतन-मनन द्वारा बौद्धिक क्षमता का विकास।
- वर्तमान सामाजिक परिवेश के प्रति जागरुकता।
- विचार अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।
- सुधार के उपाय भी सुझाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक कुछ अंधविश्वासों व रूढ़ियों के विषय में बताकर उसका समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट करें।
3. कक्षा को कुछ समूहों में बाँट दिया जाए।
4. प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
5. विषय की तैयारी हेतु उन्हें 10 से 15 मिनट का समय दिया जाए।
6. विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक विद्यार्थी को 3-4 मिनट का समय दिया जाए।
7. कार्य के दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।
8. विषय चुनाव में सहायता दें ताकि वे उन रूढ़ियों पर तैयारी करें जो समाज के विकास में बाधक हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- आत्मविश्वास
- भाषा शैली, उच्चारण
- तार्किक क्षमता
- अभिव्यक्ति/प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना।
- भाषा संबंधी अशुद्धियों का शोधन करना।
- प्रस्तुतीकरण की कमियों को सुधारने हेतु सुझाव देकर प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : स्वानुभव प्रस्तुतीकरण

विषय : जब मुझे क्रोध आता है तब.....

उद्देश्य :

- विभिन्न मनोभावों से परिचय।
- आत्मविश्लेषण की क्षमता का विकास।
- लेखन व वाचन क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक या दो कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य (पाठ समाप्ति पर कार्य करवाया जाए।)
2. सर्वप्रथम अध्यापक विभिन्न मनोभावों से परिचित कराते हुए कार्य के विषय में छात्रों को बताएं। यह भी बताएं कि विभिन्न मनोभावों का हम पर क्या प्रभाव पड़ता है जैसे चिंता, उत्साह इत्यादि....।
3. प्रस्तुत विषय पर विचार हेतु विद्यार्थियों को 10-12 मिनट का समय दिया जाए।
4. कार्य के दौरान शिक्षक छात्रों के कार्यों पर ध्यान रखें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
5. प्रत्येक छात्र को प्रस्तुतीकरण हेतु 1-2 मिनट का समय दिया जाए। इस समय अन्य छात्र तथा अध्यापक मिलकर मूल्यांकन करें।
6. कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार तथा अंक श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु

- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना
- स्वाभाविक प्रस्तुतीकरण (रोचकता, हाव–भाव, आरोह–अवरोह)
- उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी होने पर छात्र को प्रोत्साहित करें तथा सुधारात्मक सुझाव दें।
- सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति व अनुभव का चयन कर उसे लिपिबद्ध करवाएं तथा सूचनापट्ट पर प्रदर्शित करें।